067 066 062

UGC APPROVED
CARE LISTED JOURNAL
GOVT. OF INDIA RNI NO. - UPBIL/2015/62096

ISSN - 2229 - 3620

PIS

SHODH SANCHAR BULLETIN

JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Ref. No. SSB/2020/PIS48 Date : 15-12-2020

Certificate of Publication

डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभागाध्यक्ष,
शिवाजी महाविद्यालय,हिंगोली
जि. हिंगोली–431513 (महाराष्ट्र)

TITLE OF RESEARCH PAPER

बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों के उपन्यासों में सामाजिक चित्रण

This is certified that your research paper has been published in
Shodh Sanchar Bulletin, Volume 10, Issue 40, October to December 2020

Editor in Chief
SHODH SANCHAR BULLETIN
BILINGUAL INTERNATIONAL
RESEARCH JOURNAL, LUCKNOW

CHIEF EDITORIAL OFFICE

• 448/119/76, KALYANPURI THAKURGANJ, CHOWK, LUCKNOW -226003 U.P.
Cell.: 09415578129, 07905190645
E mail : serfoundation123@gmail.com
Website : http://seresearchfoundation.in | http://seresearchfoundation.in/shodhsanchar

T.C.

Assistant Professor
Shivaji College, Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

068 067 063

ISSN - 2229-3620
APPROVED UGC CARE
SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 10, Issue 40, October - December, 2020
Page Nos. 278-281
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों के उपन्यासों में सामाजिक चित्रण

[redacted]

ABSTRACT

ग्रामीण परिवेश एवं प्रकृति अधिकांश उपन्यासों में सक्रिय कथा के रूप में उभरी है। गॉव की मिट्टी की भीनी–भीनी महक ही नही, अपितु उत्पाडित मन्नतिका–पुत्रों का हृदयदावक हाहाकार भी सुनाई देता है। महानगरीय अमानुषिक तत्व गॉव में प्रविष्ट हो चुके है। कई उपन्यासकार ग्राम एवं आदिवासी जीवन में संबंधित उपन्यासों के सफल चितेरे रहे है। विकास की धारा से अछूते, संक्रमण से गुजरते तथा जीवन के मूल स्रोत एवं संस्कृति की रक्षा करने में प्रयासरत अंचलों के विभिन्न आयाम इन उपन्यासों में संजोये गए है। आज के उपन्यास मात्र संख्यात्मक नहीं बल्कि गुणात्मक दृष्टि से भी उल्लेखनीय है।

Keywords *– असामाजिक सरोकार, ग्राम एवं आदिवासी, महानगरीय अमानुषिक तत्व, स्त्री संवेदना, स्त्री–पुरूष सम्बन्ध।*

हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में उपन्यास प्रमुख विधा है। वर्तमान युग में साहित्य की सबसे अधिक लोकप्रिय विधा उपन्यास है। 'उपन्यास समग्र जीवन को चित्रीत करने वाली विधा है। जीवन को उसकी वास्तविकता के साथ–साथ यथा अर्थ अंकित करना उपन्यासकार का लक्ष होता है।'[1] बीसवीं सदी का अंतिम दशक एवं इक्कीसवीं सदी का प्रारंभ तो उपन्यास की उपलब्धि की दन्नष्टि से अत्यन्त महत्वपुर्ण काल है। आधुनिक युग में ही हिन्दी उपन्यास साहित्य का विविधांगी विकास हुआ है।[2] आज के उपन्यास मात्र संख्यात्मक नहीं बल्कि गुणात्मक दष्टि से भी उल्लेखनीय है। हिन्दी साहीत्य का सबसे नया और शक्तिशाली रुप उपन्यास में प्रकट हुआ है।[3]

रामदरश मिश्र का 1984 में प्रकाशित उपन्यास 'बिना दरवाजे का मकान' प्रकाशित हुआ। उपन्यास की कथा के केन्द्र में दो ही पात्र है। ये दोनो पति पत्नी है। पति पत्नी के माध्यमसे ही उपन्यासकार ने समाज में स्थित भिन्न–भिन्न स्थितियों को उभारने का प्रयास किया है। वास्तव में यह उपन्यास एक ऐसी नारी की गाथा है, जिसका जीवन बडा ही संघर्षमय है। यह नारी मध्यवर्गीय परिवार की है जिसका नाम दीपा है। दीपा के घर में उसकी सास और उसकी ननंद उससे अच्छा व्यवहार नहीं करते। वे उसे सदा किसी न किसी बहाने पीडित करते रहते है। दीपा अपने सुखी जीवन के स्वप्न को साकार करने पति के साथ दिल्ली जैसे महानगरों में आ जाती है, पर यहा पर भी दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोडता। पति एक दुर्घटना में अपाहिज हो जाता है और दीपा का जीवन और अधिक दुभर हो जाता है।

रामदरश मिश्र का दूसरा उपन्यास 'दूसरा घर' 1986 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में बाहर के राज्य से आये कई लोग अपना जीवन कैसे बिताते है। जीवन संघर्ष करते हुए अपना घर बसाने का प्रयास करते है। यह उपन्यास हिन्दी भाषी प्रदेश के निवासियों के संघर्ष की मार्मिक गाथा है।

गिरिराज किशोर का 'यथा प्रस्तावित' दलित शोषितों के प्रति अमानविय व्यवहार किया जाता है उसका यथार्थ चित्रण किया है। अभावों से ग्रस्त शोषण से त्रस्त के चित्र अत्याधिक मिलते है। समाज में फैली कुरितियां और समाज की असंगति का यथार्थ चित्रण उपन्यासों में दिखाई देता है। इसी दशक में प्रकाशित गिरिराज किशोर का उपन्यास 'तीसरी सत्ता' में दाम्पत्य जीवन पर प्रकाश डाला गया है। नारी पात्र रमा जो एक प्रसिध्द डाक्टर है अपनी परंपरा को माध्यम मान नौकरी छोड गृहस्थी के कष्टमय जीवन को भोगने के लिए विवश हो जाती है। वस्तुतः आज के समाज में इस प्रकार दांपत्य–संबंधी समझौते के न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता।

अब्दुल बिस्मिल्लाह की 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया', 'समरशेष', 'जहरबाद', 'दंतकथा' और 'मुखडा क्या देखे', इन्ही दो दशकों में प्रकाशित हुए। 'झीनी–झीनी बीनी चदरिया' में धार्मिक संकीर्णता और संप्रदायवाद का जमकर विरोध किया गया है। 'जहरबाद'

*सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभागाध्यक्ष, शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली, जि. हिंगोली–431513 (महाराष्ट्र)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

में गिरजापुर अंचल के एक गॉव में रहने वाले निम्नवर्गीय मुसलमान परिवार की जिदंगी का यथार्थ पर बेबाक चित्रण मिलता है। 'मुखडा क्या देखें' में भी निम्नवर्गीय अथवा दलित मुसलमान परिवार की कहानी प्रस्तुत की गई है। जो जमींदार के अत्याचार के कारण गॉव छोडकर चला जाता है पर कुछ समय बाद वापस लौट आने को विवश हो जाता है। उपन्यासकार ने गॉव में होने वाले दुखद परिवर्तनों में विशेषकर सांप्रदायिक दुर्भाव में वृध्दि का चित्रण किया है।

वर्तमान हिंदी साहित्य में जिन नये साहित्यकारों ने नारी के स्वर उसकी पीड़ा उसकी त्रासदी को अपने साहित्य में उकेरा है उनमें मैत्रेयी पुष्पा का नाम प्रमुख है। मैत्रेयी पुष्पा के प्रमुख उपन्यासों में 'इदन्नमम्', 'चाक', और 'बेतवा बहती रही' प्रमुख उपन्यास है। इन उपन्यासों में नारी जीवन की सुक्ष्म दृष्टि का परिचय मिलता है। समकालीन मानव जीवन में स्त्री–पुरूष सम्बन्धों में हो रही उथल–पुथल को अपनी सुक्ष्म दृष्टि से पकड़कर उपन्यासों में अंकित किया है। मैत्रेयी पुष्पा अपने उपन्यासों से यह बताना चाहती है कि भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान कितना उँचा है। वह नारी में नारीत्व को जागृत कराना चाहती हैं। नारी की अस्मिता, नारी की पहचान नारी की शक्ति, नारी की लड़ाई और नारी से जूड़े कई सवालों को अपने साहित्य में रूपायित करने का प्रयत्न मैत्रेयी पुष्पा ने किया है।

'इदन्नमम्' नारी चेतना को रेखांकित करनेवाला उपन्यास है। इस उपन्यास में तीन पीढ़ीयों की कथा है। इन स्त्रियों को एक सुत्रात्मक कथा में बाधा है। यह उपन्यास चरित्र प्रधान उपन्यास है। बऊ (दादी) प्रेमा (मॉ) और मंदा (मंदाकिनी) यह तीन प्रमुख पात्र है। मंदा (मंदाकिनी) के पिता महेंद्रसिंह की हत्या अस्पताल के उद्घाटन समारोह के वक्त होती है। पिता का स्वप्न था कि गाव में अस्पताल बनवाकर गॉव में सुधार लाना। महेंद्रसिंह के स्वप्न को पूरा करने की आकांक्षा बेटी मंदा में पैदा होती है। मंदा दृढ निश्चयी है। मंदा मकरंद से प्रेम करती है। वह प्रेमी मकरंद को अस्पताल में डॉक्टर बनकर आने की अपेक्षा रखती है और अपने पिता के स्वप्न को साकार करने का स्वप्न देखती है। लेकिन उसका स्वप्न मकरंद से साकार नही होता। मकरंद से उसकी सगाई टूटती है। दादी (बऊ) अपने बेटे महेंद्रसिंह की हत्या के पश्चात भूमिखोरों और लुटेरे रिश्तेदारों से बचने के लिए पराये गॉव में जाकर बसती है। वहां जाकर वह संघर्षरत रहती है। दादा पंचम सिंह के रूप में उन्हे एक सच्चा, लडायक शुभेच्छु भी मिलता है। लेकिन पंचम सिंह के भाई ककाजू सहायता और सहानुभूति की आड़ में मंदा के पिता की सारी सम्पति हड़प लेती है। मंदा के पिता की हत्या को लेकर मंदा की मॉ प्रेमा थोड़े समय के लिए शोकातुर बनती है लेकिन गुजरते समय के साथ रतन यादव के बहकावे में आकर वो उसके साथ भाग जाती है। प्रेमा रतन के पास रहकर उसका असली चेहरा पहचान चूकी है। प्रेमा रतन का हथियार बनकर रहा पसंद नही करती। वह रतन को छोड़कर वापस मंदा के पास आती है। मॉ बेटी का पुनर्मिलन बड़ा मार्मिक है। प्रेमा का प्रायश्चित तथा मंदा के प्रति ममता के कारण तथाकथित पाप धूल जाते है। बेटी भी पिघलती है। किंतु सास (बऊ) पतित प्रेमा के लिए हवेली के दरवाजे बन्द कर देते है। मंदा अपने व्यक्तिगत दुःखो से परे होकर ग्रामिण जनता के साथ तादात्म स्थापित करती है। वह समझा जाती है कि अपनी लड़ाई खूद लड़नी होती है। वह सोनपुरा गाव के शोषितों के साथ जुड़ जाती है।

मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' उपन्यास ब्रज प्रदेश के रंगलास तहसील का अतरूपर गॉव के जाट परिवार की कहानी है। अतरपूर गॉव को सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिदृश्य प्रस्तुत कर वर्तमान नारी जीवन की यातना को वास्तविक रूप देने का प्रयत्न किया है। 'चाक' समय चक्र है। चाक घूमता है तो मिट्टी को नया आकार देता है। ऐसा ही समय चक्र है जिसके घूमने से परिवर्तन होता है। इस उपन्यास में प्रमुख नारी पात्र सारंग नेनी है। सारंग, रंजीत, गजाधरसिंह, रेशम, डोरिया, केलान्सी सिंह मास्टर श्रीधर आदि पात्र है। सारंग गुरूकुल में पढ़ी–लिखी होशार लड़की है। उसका विवाह रंजित से होता है। रंजित कृषि से एम.एस.सी. पास है किन्तु घर पर रहकर अपनी पढ़ाई को प्रैक्टिकल रूप में खेतों में लगा रहा है। सारंग की फुफेरी बहन रेशम भी उसी गॉव में ब्याही है। रेशम के पति की मृत्यु के बाद पाच महीने पश्चात गर्भ धारण करती है। यह बच्चा उसके प्रेमी का है। वह लज्जा, ग्लानि क्षोभ जैसी सामाजिक पाखंडी वृत्ती के विरूद्ध लढ़ती है। लेकिन बदनामी के कारण रेशम का जेठ डोरिया उसकी हत्या कर देता है। सारंग फुफेरी बहन रेशम के हत्या का बदला लेना चाहती है। वह न्याय और अधिकार की लड़ाई लड़ती है। पर खोखली न्याय व्यवस्था उसे बरी कर देती है। पती रंजीत की कमजोरियों को हमेशा छूपाती है। गॉव में नये मास्टर श्रीधर आते है। सारंग का संबंध धीरे धीरे श्रीधर के साथ जुड़ता है। एक दिन वह श्रीधर के सामने अपना सबकुछ अर्पण कर देती है। इस तरह चाक उपन्यास बनते बिगड़ते मानवमूल्य का लेखा जोखा है।

मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'बेतवा बहती रही' में उर्वशी की दर्दनाक गाथा है। कथा नायिका उर्वशी ऐसे मैले कुचैले अभावग्रस्त किसान परिवार में जन्मी है। नाम के अनुरूप अप्रतिम सौन्दर्य स्वामिनी उर्वशी के लिए लावण्य वरदान के बदले अभिशाप साबित होता है। लेकिन उर्वशी हार मानने वाली नहीं है। वह कहती–मैं कोई ढोर नहीं हूँ कि जिसे खूँटे रस्से से बॉधकर रखना लाजिमी है। वह उपन्यास में विद्रोही रूप लेकर आती है। 'बेतवा बहती रही' उपन्यास की कथा–नायिका उर्वशी की

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

तरह चाक उपन्यास की कथा–नायिका सारंग नैनी भी स्त्री त्रासदी को लेकर उपन्यास में उभरी है। वह स्त्री उत्पीड़न के विरोध में संघर्षरत रहती हे। वह पुरूष द्वारा ढ़ाये गये जुल्मो के विरोध में खड़ी हुई अपने अधिकारो के लिए लड़ती है। अतरपूर गॉव की विभिन्न जातिवर्ग, धर्म की स्त्रियों को एक कर सारंग नैनी सामाजिक निर्माण में लग जाती है।

उपन्यासकार संजीव का 'धार' उपन्यास चर्चा में रहा है। वास्तविक क्षेत्रिय घटना पर आधारित उपन्यास है, जिसमें एक ओर यदि समाज के विरुध्द नीतियॉ है वहीं दूसरी ओर रातनीति है और कोयला माफियॉ के गठजोड के दृश्य भी इस कथा में प्रचुरता से दिखाई देते है। प्रस्तुत उपन्यास में कोयले की खानों में काम करने वाले संथाल मजदुरों की यातनाभरी जिन्दगी का करुण चित्रण है। 'साधु लोगों के धोखे में अब हम नहीं पडेंगे और नशे की खुमारी में भी नहीं पडें रहेंगे हम, अब हम जग उठेंगे ही।' इनके अन्य उपन्यासों में 'किशनगढ की अहेरी', 'सर्कस', 'सावधान! नीचे आग है' इसी काल में प्रकाशित हुए है।

प्रगतशिल विचारवाली उपन्यास लेखिका नासिरा शर्मा का 'सात नदियॉ एक समुंदर', 'शालमली', 'ठीकरे की मॅगनी', 'जिंदा मुहावरे' बीसवीं शती के अंतिम दो दशकों में प्रकाशित हुए। नासिरा शर्मा वस्तुतः नारी–जीवन की वस्तुस्थिति और उसके परिवेश को चित्रित करनेवाली लेखिका है। जिंदा मुहावरे भारत–विभाजन की भयंकर त्रासदी पद आधारित हैं। उपन्यास का शीर्षक 'ठीकरे की मॅगनी' मुस्लिम समाज के एक रिवाज से संबंधित है, जिसके अनुसार जन्म लेते ही किसी लडकीं की मंगनी किसी लडके के साथ कर दी जाती हैं। उपन्यास की प्रमुख पात्रा महरूख की जिदंगी इसी रूढि से आरंभ होती है और इसी की मनहूस छाया से उसके जीवन के कई वर्ष बीत जाते है, किंतु उसका मंगेतर रफत एक भौतिकवादी और अवसरवादी संवेदनहीन युवक है, जो भौतिक सुखों के लिए इंसानी रिश्तों की परवाह नहीं करता। महरूख इसका सामना और जीवन के संघर्ष में बडी दृढता और हिम्मत से करती है। रफत कई वर्षो बाद जब पुनः पैगाम लेकर आता है, तब वह उसे नकार देती है। उपन्यास में नारी–जीवन की इस त्रासदी को नासिरा शर्मा ने सार्थक ढंग से चित्रित किया है।

अमृतलाल नागर का उपन्यास 'खंजन नयन' वर्ण व्यवस्था तथा जाति व्यवस्था इस उपन्यास का विषय है। सम्पूर्ण उपन्यास में संत सुरदास का ही व्यक्तित्व छा जाता हैं। 'बिखरे तिनके' उपन्यास में समाज में व्याप्त भ्रष्ट्राचार, पिछडे वर्गों की जातिगत रुढियॉ और अहंभाव सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितीयॉ, राजनेताओं की नीतिशून्यता, आदि का मार्मीक चित्रण किया गया है। इसमे बिल्लु एक पात्र है वह कहता है ' राजनीति वेश्या का पेम नाटक हो गई है.....लेकिन अब तो मेरी छबी साफ सॉप–छछुंदर केरी।'[4] इस प्रकार राजनीति का वर्णन करता है। 'अग्निगर्भा' उपन्यास में भारतीय समाज में तथाकथित शिक्षित व्यक्तियों के बीच एक नारी की करुणा और आक्रोश की कहानी है। इसमें दहेज के लिए सीता के शोषण और हत्या का विश्लेषण है। 'करवट' उपन्यास में मध्यवर्ग के उदय का चित्रण किया गया है। इसमें आधुनिक भारत के निर्माण के सन्दर्भ में चर्चा की गई हैं। इसमें अग्रेजी शिक्षा का महत्व, नारी सुधार, रुढियों का विरोध आदि का वर्णन किया गया है। 'पीढीया' उपन्यास में भारत छोडो आन्दोलन से लेकर कई घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है।

डॉ. रामदशक मिश्र का नवें दशक में प्रकाशित उपन्यास 'बिना दरवाजे का मकान' में घर–घर चौका–बर्तन करनेवाली नारी के माध्यम से आज की महानगरीय जिंदगी को पहचानने समझने और परखने का प्रयास हुआ है। निःसंदेह यह कथावस्तु यथार्थ जीवन की सच्ची तस्वीर दिखाने के लिए एह सही कृति है।

चित्रा मुदगल का 'आवॉ' उपन्यास नारीवादी सरोकार का साक्ष्य है। वहीं दूसरा उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में महानगरीय परीवेश का चित्रण है। 'आवॉ' उपन्यास का प्रमुख पात्र नमिता पांडे है। 'आवॉ' उपन्यास भी स्त्री वेदना को उकेरता, स्त्रियों की अंतर–बाह्य स्थितियों का विस्तृत वर्णन करता है। चित्रा मुदगल स्त्री शोषण की महागाथा को प्रस्तुत उपन्यास में निरूपित करके कथा नायिका नमिता की कोख खरीदने के षडयंत्र का पर्दाफाश करती है। नमिता हर जगह शोषित होती है। कभी मौसाजी से, कभी अन्ना साहब से और कभी संजय कनौइ से। लेकिन शोषित होते हुए भी नारी जगत में एक चिनगारी पैदा कर देती है। उनका एक दूसरा उपन्यास 'एक जमीन अपनी' की कथा–नायिका अंकिता औरत के रूप में अपने आपको सफल और सुरक्षित मानती है। मगर दुनियादारी की ऑखो में वह परित्यकता है, अकेली है। यहॉ तक कि सगे दोस्त की पत्नी तक उसे शंका की दृष्टि से देखने लगती है। लेकिन स्वाभिमानी औरत है। इस उपन्यास में कई गोण कहानीयॉ है जो मुख्य कथा के साथ चलती है। वहीं दूसरा उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में मुबंई के महानगरीय परिवेश में विज्ञापन–जगत का आकर्षण, मूल्यहीन प्रतियोगिता, तिकडम, देह–व्यापार आदि को रोमांचकारी चित्रण मिलता है। उनके दूसरे उपन्यास 'आवां' में एक नवयौवना लडकी का जीवन–संघर्ष किया है, जिसे वह एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्म लेने के साथ भोगती है।

गोविंद मिश्र के उपन्यास 'तुम्हारी रोशनी' में स्त्री अस्मिता से जुडे सवालो को एक गहरी संवेदनशीलता और तर्क के साथ प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास की

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

नायीका सुवर्णा के लिए जीवन खुशी का पर्याय है, जिसे पाने के लिए वह परंपरागत दांपत्य–संहिता की परवाह नहीं करती।

मंजुल भगत के उपन्यास 'तिरछी बौच्छार' में शिक्षित नारी और उसके स्वावलंबी जीवन पर दोनों उपन्यासकारों ने अपनी–अपनी दृष्टि से प्रकाश डाला है। इसमें सुखी दांपत्य संबंधो मे अनेक कठिनाइयॉ, समस्याएँ और असुविधों का वर्णन है, जहॉ पति अपनी पत्नी को एक भोग की वस्तु समझकर शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताडित करना अपना पारंपारिक अधिकार समझता है।

दशवें दशक में प्रकाशित मृदुला गर्ग के उपन्यास 'कठगुलाब' में नारी विषयक धारणा को उजागार किया गया है, जिसमें स्त्री कहीं की भी हो, उच्चवर्ग की हो या निम्नवर्ग की, पुरूष व्दारा श्रम एवं सेक्स दोनों रूपों में शोषित होना उसकी नियति बनी हुई है। इस समस्या पर भी सामाजिक नियमों, आदशों एवं चलन को मूल्यांकित करने की अवाश्यकता है। समाज कहीं का भी हो, स्त्री पुरूष के शोषण और दमन से अभी तक मुक्त नहीं हो पाई है।

इसी कालखंड में शिवप्रसाद सिंह का 'शैलूष' उपन्यास प्रकाशित हुआ। वस्तुतः यह उपन्यास विंध्यक्षेत्र के नटों, बेडियों के कबीलाई जीवन को अपनी क्रोड में ठिपाए हुए है। इसमें आंचलित बर्गविशेष का यथार्थ चित्रण है, पर समस्या का कोई समाधान नही मिला है। दशवें दशक में ही जयप्रकाश कर्दम का उपन्यास 'छप्पर' आया। वस्तुतः यह दलित–जीवन पर लिखा गया श्रेष्ठ उपन्यास है, जिसमें सवर्ण समाज व्दारा दलित समाज के उत्पीडन तथा उसके विरूध्द दलितों के उठ खडे होने का चित्रण है। इसी कालखंड में रमेशचंद्र शाह का उपन्यास 'किस्सा गुलाम' भी प्रकाशित हुआ। दलित जाति में जन्मे पात्र कुंदन की कुंठा और विद्रोह की भावना का चित्रण है।

मनमोहन पाठक का 'गगन घटा घहरानी' आदिवासीयों के जीवन पर आधारीत उपन्यास है। गुलाब और मालीक के व्यवहार को यथार्थ रुपसे चित्रित किया हैं। तनाओं में, संघर्षरत दलितों में नई चेतना, नया उत्साह जागृत करती है।

मोहनदास नैमिषराय का 'मुक्तिपर्व' उपन्यास में दलितों के जीवन का संघर्ष है। दलितों की अज्ञानता, निरक्षरता, विषमता, भेदभाव, धर्माधता, कुरीतियों, व्यसन, स्त्री–पुरुशन भेद शोषण, अन्याय और जुल्मों से मुक्त होना है। इस उपन्यास में बंसी प्रमुख पात्र है। वह अनपढ है लेकिन मुक्ति एवं आजादी को भली भॉती जानता और समझता है। परम्परागत से आयी गुलामी की दास्तान को तोडते हुए बंशी नवाब साहब से कहता है "जनाबे अली हम न गुलाम थे,न गुलाम है और न गुलाम रहेंगे।"[5] प्रस्तुत उपन्यास में दलित जीवन पर यथार्थ रुपसे प्रकाश डाला गया है।

अंततः सारांश रुप में कह सकते है कि सदी के अंतिम दो दशकों में सामाजिक, राजनीतिक अधिकारों को बौध्दिक वर्ग में अनेक विविधताओं के साथ वर्णित कर उसे रूपायित करने प्रयास उपन्यासकारों ने किया है। इसमें मध्यम श्रेणी के वर्ग, समुदाय और शिक्षित पात्र भी आते है। इसकी प्रेरणा वस्तुतः सामाजिक परिवर्तन के कारण मिलती है। उपन्यास के माध्यम से मध्यमवर्ग का सशक्त चित्रण मिलता है। पर चिंता का विषय यह है यही वर्ग अब बहुराष्ट्रीय कंपनियों और उद्योगपतियों के मोह में उलझा हुआ है। इन उपन्यास में स्त्री पात्रों के माध्यम से पारिवारिक जीवन में भी घुटन, उपेक्षा का संग्राम भोगने को मिल जाता है। इस समयावधि में आदिवासी समाज से जुडे अनेक लेखक सामने आये है। दलित शोषितों के प्रति अमानविय व्यवहार का चित्रण इन उपन्यासों में दिखाई देता है। असामाजिक सरोकार की पीडा इस दशक के अनेक लेखकों में देखने की मिल जाती है।

संदर्भ :

1. खैरनार राजेन्द्र, आधुनिक परिपेक्ष में हिन्दी साहित्य, दिव्य दिव्य डिस्ट्रीब्युटर्स, कानपुर, प्रथम संस्करण 2011, पृ. 41
2. जाधव वंदना, रामदरश मिश्र के उपन्यास और ग्रामीण परिवेश, गोरवाणी प्रकाशन औरंगाबाद, प्रथम संस्करण 2010, पृ. 14
3. कुरे रमेश, अमृतलाल नागर के उपन्यासों का अनुशिलन, समता प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 2012 पृ. 13
4. नागर अमृतलाल, बिखरे तिनके, राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशन दिल्ली प्र. स. 1986 पृ. 90
5. नैमिषराय मोहनदास, मुक्तिपर्व, अनुराग प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2011 पृ. 66

❑❑❑

Assistant Professor
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli